Q No. 01 मुद्रास्फीति के विभिन्न कारणों का वर्णन करें |

मुद्रास्फीति आधुनिक अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण आर्थिक समस्या है। जब किसी देश में वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य-स्तर में लगातार और पर्याप्त वृद्धि होती है तथा मुद्रा की क्रय-शक्ति में कमी आती है, तो इस स्थिति को मुद्रास्फीति (Inflation) कहा जाता है। मुद्रास्फीति के कारण वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें बढ़ती हैं और समान मात्रा की आय से पहले की तुलना में कम वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं।

मुद्रास्फीति केवल किसी एक वस्तु की कीमत बढ़ने का नाम नहीं है, बल्कि अर्थव्यवस्था के सामान्य मूल्य-स्तर में व्यापक वृद्धि को मुद्रास्फीति कहा जाता है। इसके अनेक आर्थिक, मौद्रिक, राजकोषीय, सामाजिक तथा अंतरराष्ट्रीय कारण होते हैं।

मुद्रास्फीति के प्रमुख कारण

1. मुद्रा की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि

मुद्रास्फीति का एक प्रमुख कारण अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा का आवश्यकता से अधिक बढ़ जाना है। जब लोगों के पास खर्च करने के लिए अधिक धन उपलब्ध होता है, तो वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ती है। यदि उत्पादन उसी गति से नहीं बढ़ता, तो मांग और आपूर्ति के बीच असंतुलन पैदा होता है और कीमतें बढ़ने लगती हैं।

2. कुल मांग में वृद्धि

जब अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग उत्पादन की तुलना में तेजी से बढ़ती है, तो कीमतों पर दबाव पड़ता है। लोगों की आय बढ़ना, उपभोक्ता ऋण का विस्तार, सरकारी खर्च में वृद्धि तथा निवेश में तेजी आदि कुल मांग को बढ़ा सकते हैं। इस प्रकार उत्पन्न मुद्रास्फीति को मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति कहा जाता है।

3. उत्पादन में कमी

यदि किसी कारण से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन कम हो जाता है, तो बाजार में उनकी आपूर्ति घट जाती है। मांग पहले जैसी रहने पर भी कीमतें बढ़ सकती हैं। उदाहरण के लिए, सूखा पड़ने पर कृषि उत्पादन कम होने से खाद्यान्नों की कीमतों में वृद्धि हो सकती है।

4. उत्पादन लागत में वृद्धि

कच्चे माल, मजदूरी, बिजली, ईंधन, परिवहन तथा अन्य उत्पादन साधनों की कीमत बढ़ने से उत्पादन लागत बढ़ जाती है। उत्पादक अपनी बढ़ी हुई लागत की भरपाई के लिए वस्तुओं की कीमत बढ़ा सकते हैं। इस प्रकार उत्पन्न मुद्रास्फीति को लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति कहा जाता है।

5. सरकारी व्यय में वृद्धि

सरकार द्वारा विकास योजनाओं, सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, वेतन, पेंशन आदि पर अधिक खर्च करने से अर्थव्यवस्था में आय और मांग बढ़ सकती है। यदि उत्पादन में समान अनुपात में वृद्धि नहीं होती है, तो वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ सकती हैं।

6. राजकोषीय घाटे में वृद्धि

जब सरकार का कुल व्यय उसकी कुल आय से अधिक हो जाता है, तो राजकोषीय घाटा उत्पन्न होता है। यदि सरकार लगातार बड़े घाटे के साथ अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त मांग पैदा करती है और उसके साथ उत्पादन पर्याप्त नहीं बढ़ता, तो मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ सकता है।

7. बैंक ऋण का विस्तार

वाणिज्यिक बैंकों द्वारा आसान शर्तों पर अधिक मात्रा में ऋण उपलब्ध कराने से लोगों और व्यवसायों की क्रय-शक्ति बढ़ती है। इससे उपभोग और निवेश में वृद्धि होती है। यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन की क्षमता सीमित हो, तो बढ़ी हुई मांग कीमतों में वृद्धि का कारण बन सकती है।

8. ब्याज दरों में कमी

ब्याज दर कम होने पर ऋण लेना अपेक्षाकृत आसान हो जाता है। लोग घर, वाहन और अन्य वस्तुओं के लिए अधिक ऋण ले सकते हैं तथा व्यवसाय भी अधिक निवेश कर सकते हैं। इससे कुल मांग बढ़ सकती है और मांग के अधिक बढ़ने पर मुद्रास्फीति उत्पन्न हो सकती है।

9. जनसंख्या में वृद्धि

जनसंख्या बढ़ने से भोजन, कपड़े, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन आदि की मांग बढ़ती है। यदि उत्पादन और आपूर्ति जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकताओं के अनुसार नहीं बढ़ती, तो वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि हो सकती है।

10. प्राकृतिक आपदाएँ

बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूकंप और अन्य प्राकृतिक आपदाएँ उत्पादन और आपूर्ति को प्रभावित कर सकती हैं। विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में उत्पादन कम होने पर खाद्यान्नों और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतें बढ़ सकती हैं।

11. आयातित मुद्रास्फीति

किसी देश द्वारा आयात की जाने वाली वस्तुओं, विशेषकर पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, कच्चे माल और मशीनरी की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में वृद्धि होने पर घरेलू उत्पादन लागत बढ़ सकती है। परिणामस्वरूप घरेलू बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें भी बढ़ सकती हैं। इसे आयातित मुद्रास्फीति कहा जाता है।

12. पेट्रोलियम और ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि

पेट्रोल, डीजल, गैस और बिजली लगभग सभी क्षेत्रों की लागत को प्रभावित करते हैं। ईंधन की कीमत बढ़ने से परिवहन, कृषि, उद्योग और व्यापार की लागत बढ़ती है। इसके कारण अनेक वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ सकती हैं।

13. जमाखोरी

जब व्यापारी भविष्य में अधिक कीमत मिलने की आशा में वस्तुओं को बाजार में उपलब्ध कराने के बजाय जमा करके रखते हैं, तो बाजार में कृत्रिम कमी पैदा हो सकती है। इससे वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं और मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ता है।

14. कालाबाजारी

कालाबाजारी में वस्तुओं को सामान्य बाजार व्यवस्था से हटाकर अधिक कीमत पर बेचा जाता है। आवश्यक वस्तुओं की कृत्रिम कमी पैदा होने से उनके बाजार मूल्य में वृद्धि हो सकती है। इससे सामान्य उपभोक्ताओं पर महँगाई का बोझ बढ़ता है।

15. निर्यात में वृद्धि

यदि किसी वस्तु का बहुत अधिक हिस्सा विदेशों को निर्यात कर दिया जाता है और घरेलू बाजार में उसकी उपलब्धता कम हो जाती है, तो घरेलू कीमतों में वृद्धि हो सकती है। विशेष रूप से आवश्यक वस्तुओं के मामले में इसका प्रभाव अधिक दिखाई दे सकता है।

16. मजदूरी में वृद्धि

मजदूरी बढ़ने से श्रमिकों की आय और क्रय-शक्ति बढ़ती है, जिससे मांग बढ़ सकती है। दूसरी ओर, यदि मजदूरी में वृद्धि उत्पादन की उत्पादकता की तुलना में बहुत अधिक हो, तो उत्पादन लागत भी बढ़ सकती है। दोनों स्थितियों में कीमतों पर ऊपर की ओर दबाव पड़ सकता है।

17. करों में वृद्धि

सरकार द्वारा अप्रत्यक्ष करों जैसे वस्तु एवं सेवा कर या अन्य करों में वृद्धि करने से वस्तुओं और सेवाओं की अंतिम कीमत बढ़ सकती है। इससे उपभोक्ताओं को वस्तुएँ पहले की तुलना में महँगी मिलती हैं और मूल्य-स्तर में वृद्धि हो सकती है।

18. परिवहन लागत में वृद्धि

ईंधन की कीमतों में वृद्धि, परिवहन साधनों की कमी या परिवहन व्यवस्था में बाधा आने से वस्तुओं को बाजार तक पहुँचाने की लागत बढ़ जाती है। व्यापारी और उत्पादक इस बढ़ी हुई लागत को वस्तुओं की कीमत में शामिल कर सकते हैं।

19. उत्पादकता में कमी

यदि श्रमिकों की उत्पादकता घटती है या उत्पादन तकनीक में पर्याप्त सुधार नहीं होता, तो प्रति इकाई वस्तु के उत्पादन की लागत बढ़ सकती है। इससे उत्पादक वस्तुओं की कीमत बढ़ा सकते हैं और मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिल सकता है।

20. आर्थिक विकास के दौरान मांग में वृद्धि

तेजी से आर्थिक विकास के समय रोजगार, आय और निवेश में वृद्धि होती है। इससे लोगों की क्रय-शक्ति बढ़ती है और विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग तेजी से बढ़ सकती है। यदि उत्पादन की क्षमता मांग के अनुरूप नहीं बढ़ती, तो कीमतों में वृद्धि होने लगती है।

21. युद्ध और राजनीतिक अस्थिरता

युद्ध या राजनीतिक अस्थिरता के कारण उत्पादन, परिवहन और अंतरराष्ट्रीय व्यापार प्रभावित हो सकते हैं। आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति कम होने और लागत बढ़ने से कीमतों में वृद्धि हो सकती है।

22. भविष्य में कीमतें बढ़ने की आशंका

जब उपभोक्ताओं और व्यापारियों को यह विश्वास होने लगता है कि भविष्य में कीमतें और बढ़ेंगी, तो वे वर्तमान में अधिक मात्रा में खरीदारी या भंडारण करने लगते हैं। इससे वर्तमान मांग बढ़ती है और कीमतों में और वृद्धि हो सकती है। इस प्रकार मुद्रास्फीति की अपेक्षाएँ स्वयं मुद्रास्फीति को बढ़ा सकती हैं।

23. विदेशी विनिमय दर में परिवर्तन

यदि किसी देश की मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्राओं की तुलना में कम हो जाता है, तो आयातित वस्तुएँ महँगी हो सकती हैं। आयातित कच्चे माल और ऊर्जा की लागत बढ़ने से घरेलू उत्पादन की लागत भी बढ़ सकती है और मुद्रास्फीति का दबाव उत्पन्न हो सकता है।

24. आपूर्ति श्रृंखला में बाधा

उत्पादन से लेकर थोक बाजार और खुदरा बाजार तक वस्तुओं की आपूर्ति में किसी प्रकार की बाधा आने पर बाजार में वस्तुओं की उपलब्धता कम हो सकती है। परिवहन समस्या, कच्चे माल की कमी, बंदरगाहों में देरी या अन्य व्यवधान इसके उदाहरण हैं। इससे कीमतें बढ़ सकती हैं।

मुद्रास्फीति के कारणों का संक्षिप्त वर्गीकरण

मुद्रास्फीति के कारणों को मुख्य रूप से निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है–

(क) मांग-पक्ष के कारण

- मुद्रा की मात्रा में वृद्धि
- सरकारी व्यय में वृद्धि
- बैंक ऋण का विस्तार
- जनसंख्या और आय में वृद्धि
- निवेश में वृद्धि
- उपभोग में वृद्धि

(ख) आपूर्ति-पक्ष के कारण

- उत्पादन में कमी
- कच्चे माल की कीमत में वृद्धि
- मजदूरी में वृद्धि
- ईंधन और ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि
- प्राकृतिक आपदाएँ
- परिवहन लागत में वृद्धि

(ग) अन्य कारण

- जमाखोरी और कालाबाजारी
- राजकोषीय घाटा
- आयातित मुद्रास्फीति
- युद्ध और राजनीतिक अस्थिरता
- विनिमय दर में परिवर्तन
- आपूर्ति श्रृंखला में बाधा

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि मुद्रास्फीति एक बहुआयामी आर्थिक समस्या है। इसके पीछे केवल मुद्रा की अधिकता ही जिम्मेदार नहीं होती, बल्कि अत्यधिक मांग, उत्पादन में कमी, उत्पादन लागत में वृद्धि, सरकारी व्यय, राजकोषीय घाटा, बैंक ऋण का विस्तार, आयातित महँगाई, प्राकृतिक आपदाएँ, जमाखोरी तथा अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियाँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।